5 जून 2023
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532

मासिक जागरण पत्रिका

डरावना सच !!!

द केरल स्टोरी फिल्म ने पूरे देश को सोचने पर विवश कर दिया है,
केरल में बड़े पैमाने पर चल रहा जिहाद का यह खेल,
शेष भारत में भी चल रहा है.... यह भयानक है, किंतु सच है।।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाए.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500

ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 मार्च 2023 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 02 अंक : 12
•••
आषाढ़ / कृष्ण
युगाब्द ५१२५

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
•••

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

भारतवर्ष पर कई प्रकार से जेहादी षड्यंत्र चल रहे हैं। भारत का जनमानस सहिष्णु, सरल, भोला तथा भावुक स्वभाव के कारण इन सुनियोजित षड्यंत्रों में आसानी से घिर जाता है। आज कई प्रकार के उदाहरण हमारे सामने हैं। जब इन षड्यंत्रों के पर्दाफाश करने के लिए **'द केरला स्टोरी'** जैसी कोई फिल्म बनती है तो समाज की आँखें खुलती हैं तथा इन षणयंत्रों का समर्थन करने वाले इसके विरोध में उतर आते है तथा अपने राजनैतिक अधिकार वाले क्षेत्र में इस फिल्म को दिखाने पर प्रतिबंध तक लगा देते हैं। यह फिल्म हम सबको सावधान करती है विशेष रूप से उन किशोरियों पर इन षड्यंत्रकारियों की कुदृष्टि है।

वैसे जेहाद के कई रूप हैं जो हमें प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देते अब हमको सजग रहकर इनसे बचने का उपाय करना होगा। उपाय भी हमारे पास है। हमारे बच्चे हमारे संस्कारों में ही पले-बढ़े होते हैं उन्हें उचित परिवेश देकर वर्तमान परिस्थितयों से अवगत करवाने का प्रथम कर्तव्य अभिभावकों का ही होता है संस्कारों के अभाव में बच्चियां भटक जाती है।

'द केरला स्टोरी' आज के समाज की सच्चाई है। इसे आज की युवा पीढ़ी को अवश्य देखना चाहिए जिससे वो भविष्य के लिए सतर्क हो सकें। आज समाज में जागृति के साथ सक्रियता होना भी आवश्यक है। यह फिल्म कोरी कल्पना नहीं है अपितु सच्ची घटनाओं पर आधारित है। समाज का जितना नुकसान दुर्जनों के सक्रियता से हुआ है, उससे कहीं अधिक नुकसान सज्जनों की निष्क्रियता से हो रहा है।

अतः अब समय आ गया है कि समाज जागरण कर इन षड्यंत्रों को उजागर करके उनसे बचने का उपाय करना होगा।

विश्व पटल पर भारत का बढ़ता कद कुछ जेहादी मानसिकता वाले लोगों को अच्छा नहीं लग रहा और वो भारत की बढ़ रही पद प्रतिष्ठा से बहुत विचलित हैं। भारत में हिन्दुत्व के प्रति बढ़ती निष्ठा और विश्व में उसकी ससम्मान स्वीकार्यता को कुछ देशद्रोही लोग सहन नहीं कर पा रहे हैं और वो कई प्रकार के षड्यंत्र रचकर उसकी प्रतिष्ठा को धूमिल करना चाहते हैं।

अतः हम सभी भारतवासियों को वर्तमान समय में अत्यन्त सावधान रहने की आवश्यकता है।

डरावना सच

✒ अमन व्यास

बहुप्रतीक्षित **द केरल स्टोरी** फिल्म आ चुकी है। **द कश्मीर फाइल्स** की तरह ही इसके टीजर से ट्रेलर तक और अब फिल्म के प्रदर्शित होने पर विरोध और समर्थन दोनों की आंधी आई हुई है। लेकिन क्या इस देश को अपने अतीत का सत्य जानने की जरूरत नहीं है? और केरल स्टोरी तो अतीत भी नहीं है, वह तो वर्तमान है जो प्रतिदिन घट रहा है। आज अधिकृत रूप से केरल की 32,000 से अधिक लड़कियां आतंक की साजिश में फंसकर अपना जीवन समाप्त कर चुकी हैं।

केरल, देश का चिकित्सा शिक्षा का केंद्र है, देश भर के चिकित्सालयों में केरल की लड़कियां नर्स के रूप में सेवाएं दे रही हैं। दुनिया भर में बैठे आतंकियों ने केरल के मेडिकल कॉलेज को ही अपना केंद्र बनाया, दुनिया भर में सक्रिय आतंकी तंत्र ने केरल में अपने लिए कार्य करने वाले लोग खड़े किए और केरल की हजारों लड़कियों का ब्रेनवाश कर उन्हें मानव बम में बदल दिया।

उनसे प्रेम का ढोंग किया, निकाह किए, नशे की लत लगाई, उनके धर्म को हीन और इस्लाम को सर्वश्रेष्ठ बताया, अल्लाह ही दुनिया को चला रहा इस तरह के तथ्य उनके मन में गहरे उतारे, जन्नत का सुख और दोज़ख की आग के डर उनके हृदय में इतने गहरे उतारे गए कि वे और कुछ जानने की हिमत भी न कर पाई। इनके फलस्वरूप जिन लड़कियों ने कभी अपने परिवार की न सुनी, वे अफगान -सीरिया के आतंकियों के धन से पलने वाले मौलवी की सुनने लगी।

अपने हिसाब के कपड़े पहनने वाली लड़कियों ने

हिजाब पहनना शुरू कर दिया। जिनके घरों में हवन के पश्चात् प्रायश्चित हवन होता था कि पूजन में किसी जीव की गलती से मृत्यु हो गई हो तो ईश्वर क्षमा करें, उन्होंने जीवों को काटते और पकाते देखा।

यह सब तो सामान्य-सी बातें हैं, लेकिन इन लड़कियों का मानव बम बन जाना असामान्य है। इन लड़कियों का सैंकड़ों बार रेप होना असामान्य है। ये एक होती तो अपवाद कह देते, दुर्घटना कह देते, किसी के मन में उपजा कट्टरपंथ कह देते, पर ये आंकड़ा अनुमानित रूप से 32,000 है और यह भी कितना हास्यास्पद है न कि फिल्म में हिंदू देवी-देवताओं के बारे में कही गई कुछ अपमानजनक बातों से कोई हिंदू आहत नहीं हुआ, क्योंकि वह विषय की स्पष्टता के लिए जरूरी था। लेकिन वाम खेमा आहत हुआ, क्योंकि वे यह चाहते हैं कि फिल्म को किसी भी तरह से रिलीज होने से रोका जाए।

लेकिन वामपंथी यह नहीं जानते कि जब केरल में मुस्लिम कट्टरता का तूफान आया तो उसका शिकार केवल हिन्दुओं की बेटियाँ नहीं हुई, उनकी बेटियाँ भी हुई जो कहते हैं **धर्म अफीम है**, उनकी भी हुई जिन्होंने मिशनरियों के माध्यम से सेवा के नाम पर खूब कन्वर्जन किया। केरल -अफगान -सीरिया के इस आतंकी तंत्र ने वामपंथियों और ईसाइयों को भी नहीं छोड़ा।

द केरल स्टोरी और **कश्मीर फाइल्स** जैसी फिल्मों का विरोध करने वाले वही हैं जिन्होंने मालेगांव के बम ब्लास्ट में एक साध्वी को षड्यंत्र करके आरोपी बनाया और **भगवा आतंकवाद** का विमर्श गढ़ा। अभी बहुत सी **फाइल्स और स्टोरीज** का दुनिया के सामने आना शेष है। विश्वविद्यालयों को अपने प्रोपेगेंडा का केंद्र बनाने वालों का सत्य दुनिया के सामने धीरे-धीरे आ रहा है।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जनेवि) में भारत तेरे टुकड़े होंगे के नारे लगाने वाले, फ्री कश्मीर के पोस्टर लगाने वाले, हैदराबाद में नारा -ए-तकबीर कहने वाले, जामिया में हम भी देखेंगे का गीत गाने वाले, केरल के विश्वविद्यालय में जन्नत -दोजख और हिजाब बताने वाले, कश्मीर में पत्थरबाजी करने वाले, पाकिस्तान में बैठकर भारत को गरियाने वाले, अफगानिस्तान में सरकार बनाने वाले, सबका एक ही लक्ष्य है - **भारत को इस्लामिक देश बनाना**

लेकिन वह नहीं कर पाएंगे, क्योंकि भारत जाग गया है। बारूद का ढेर बनने से पहले, लेकिन सैंकड़ों शालिनी उन्नीकृष्णन के जीवन तबाह होने के बाद, बस अब यह जागरण की बेला अविरत चले, ताकि यह आंकड़ा न बढ़े, न केरल में और न ही किसी अन्य राज्य में।

स्वावलंबी भारत-समृद्ध भारत

इस ध्येय वाक्य के साथ संपन्न हुआ सेवा संगम।

समाज के अभावग्रस्त, वंचित एवं पिछड़े हुए बंधुओं को सेवा के माध्यम से सशक्त और स्वावलंबी बनाने के कार्य में सक्रिय लगभग एक हजार संस्था-ट्रस्टों के कार्यकर्ता गत 7,8 व 9 अप्रैल को राष्ट्रीय सेवा भारती द्वारा आयोजित अद्भुत सेवा संगम में सहभागी बनने हेतु जयपुर के जामडोली स्थित केशव विद्यापीठ परिसर में एकत्रित हुए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत द्वारा राष्ट्रीय सेवा संगम के उद्घाटन अवसर पर दिए गए उद्बोधन के संपादित अंश -

प्रसिद्धि से दूर रहकर करें सेवाकार्य

'हमें जय-जय नहीं करनी है और न ही करवानी है। जो सबने मिलकर तय किया, उसको मानना और असहमत होते हुए भी कार्य सफल करना कार्यकर्ता का स्वभाव होना चाहिये। सेवा कार्य में जोश से ज्यादा होश की आवश्यकता रहती है।'

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक स्वभावतः अपनी-अपनी बुद्धि, शक्ति के अनुसार सेवाकार्य कर रहे हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि देश में सेवा करने वाले पहले संघ के स्वयंसेवक हैं, हमारे देश में सेवा का मंत्र तो प्राचीन काल से ही दिया गया है। संघ की दृष्टि से दक्षिण के चार प्रांतों में केवल आध्यात्मिक क्षेत्र के आचार्य, संन्यासी इत्यादि मिलकर जो सेवा करते हैं, वे मिशनरियों की सेवा से कई गुना ज्यादा हैं। सेवा मनुष्य के मनुष्यत्व की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। अगर किसी का दुख मुझे दिख रहा है, तो केवल दुखी होने से नहीं अपितु उस दुख का इलाज करने का प्रयास करना होगा। सेवा स्वस्थ समाज को बनाती हैं, लेकिन स्वस्थ समाज को बनाने के लिए पहले हमको स्वस्थ होना है। आज कुछ लोगों को मजबूरी में लेने वाला बनना पड़ रहा है, लेकिन कल वे देने वाले बनेंगे, ऐसी सेवा करनी है। हम सबके मिलने से समाज बना है। एक नहीं है, तो हम अधूरे हो जाएंगे। सब एक-दूसरे के साथ हैं, तब हम पूर्ण होते हैं। हम सब एक राष्ट्रपुरुष के अंग होने के नाते अपने-अपने स्थान पर काम करते रहेंगे। काम के अनुसार रूप-रंग निराला होता होगा। जैसे समस्त अंगों का होता है, लेकिन हम सब में एक प्राण है। यदि कोई अंग बीमार है और यह पता है तो तत्क्षण शरीर के सारे अंग उस पीड़ा को हरने के लिए अपने-अपने स्तर से जुट जाते हैं, उस समय अन्य कोई भी बात ध्यान में नहीं आती। समाज को ऐसा ही होना चाहिए। समाज का एक अंग उपेक्षित है, दुबला है, उसको नीचे का स्थान है। अगर किसी शरीर का एक अंग दुबला है, उसे पीछे रख दिया गया है, तो उस शरीर को स्वस्थ शरीर नहीं कह सकते। इसलिए अपने देश को अच्छा देश बनाना है। विश्व गुरु बनाना है। इसका मतलब वह सर्वांग परिपूर्ण होना चाहिए। उसका प्रत्येक अंग सामर्थ्य संपन्न होना चाहिए। कार्यकर्ता कार्य के स्वभाव के साथ तन्मय होता है, तब कार्य होता है। हमें विश्व मंगल के लिए काम करना है। इसलिए काम करने वालों का बड़ा समूह खड़ा करना है। कार्य करने के लिए कार्यकर्ता में रुचि, ज्ञान और भान होना आवश्यक है। प्रसिद्धि से दूर रहकर सेवा कार्य करना है। सात्विक प्रकृति का हमारा कार्य है, इसलिए सात्विक कार्यकर्ता बनाने पड़ेंगे। सेवा में उग्रता नहीं, सौम्यता चाहिए। इसलिए 100 काम हो जाएं, तब एक बताने का हमारा स्वभाव होना चाहिए।

हमें सेवा भाव से समाज के हर अंग को सबल और पूरे विश्व को कुटुंब बनाना है। ऐसा तभी संभव है, जब सेवा का कार्य समाजव्यापी अभियान बन जाए।

सावित्री आज भी है

डॉ. सोनाली सिंह नरगुंदे

अश्वपति के घर 18 बरसों की तपस्या के बाद एक कन्या जन्मती है और उसका हाथ मांगने की हिम्मत राजकुमारों की भी नहीं होती तो इसका कारण सिर्फ संपन्नता और सौंदर्य नहीं था। तब पिता ने यह कार्य अपनी बेटी को सौंप दिया और एक लकड़हारे के रूप में सावित्री ने शाल्व वन में सत्यवान को चुना। वह घर लौटकर अपने परिजनों और नारद को अपने चुने हुए वर का नाम-पता बताती है तो वे कहते हैं कि ओह सावित्री तुमने सत्यवान को नहीं नियति को चुना है। तुम्हारे लिए हर प्रकार से वर उपयुक्त है परंतु उसे एक ऐसा दोष है जो सभी गुणों को मिटा देता है। वह आज से ठीक एक साल बाद काल का ग्रास बनेगा और भला काल को कौन टाल सका है? बरसों की तपस्या के बाद मिली पुत्री के भाग्य का यह क्षण माता-पिता टाल ना सके। उन्हें लगा कि कोई तो ऐसा समय होगा जब यह काल टल जाए। यह बात सिर्फ सावित्री जानती है और सत्यवान इससे अनभिज्ञ है। सिर्फ वही जानती है कि उसने अपनी नियति में क्या चुना है। यह समझना कि जानते हुए भी सत्यवान को चुनना बड़े ही साहस और धैर्य का मसला है। उसने एक साल ना सिर्फ सत्यवान के साथ बिताया बल्कि आने वाले उस क्षण की मृत्यु के साथ भी बिताया। यहां सावित्री का महिमामंडन नहीं है बल्कि एक ऐसी महिला के मन की बात है जो वह अकेले जूझती है। वह किसी ने नहीं कहती और अकेले खुद को आने वाले समय की तैयारी करने में लगी रहती है। वह तभी तय कर लेती है कि नियति के सामने हथियार नहीं डालने हैं। चुप नहीं रहना है। सत्यवान को जब काल लेने आएगा तब वह साथ रहेगी और सामना करेगी। जब यम सत्यवान को लेने आते हैं तो वह प्राणहीन सत्यवान को यथावत जमीन पर रखकर यम के पीछे चल देती है। यहां से यम और सावित्री के बीच बातचीत होती है और उस बातचीत में किस प्रकार से संवाद रखा या किया गया होगा यह एक विचारणीय पक्ष है। सावित्री तटस्थता और तार्किकता से अपना पक्ष रखती है। वह किसी ग्लानि, भीख अथवा अनिर्णय जैसी स्थिति में नहीं है। वह सिर्फ सत्यवान की वापसी चाहती है। उसके लिए वह यम से सीधी बात करती है। यम उसके तर्कों, वचनों और कर्म से प्रसन्न होकर सत्यवान के प्राण लौटा देते हैं। ऐसे ही आज भी भारतीय पारंपरिक समाज में महिलाएं सावित्री की तरह अपने पति को सत्यवान मानती हैं और उनके साथ जीवन को साकार करती हैं। आधुनिकता की दौड़ में इसे दकियानूसी कहना और उन महिलाओं को जो ऐसे व्रत करती हैं उनका मजाक उड़ाना कतई ठीक नहीं है। सत्यवान और सावित्री एक परंपरा से निकले हैं परंतु उनमें आस्था नितांत व्यक्तिगत विषय है। आस्था और रिवाज किसी के भी जीवन में बलात् ठूंसे नहीं जा सकते हैं, इन्हें जीना होता है। हमारे मालवा और निमाड़ की संस्कृति में ज्येष्ठ की अमावस्या और पूर्णिमा दोनों को वट की पूजा करके मनाया जाता है। ऐसे ही महाराष्ट्र, राजस्थान और गुजरात में भी इन दोनों दिनों की परंपरा है। बड़ की पूजा करने की वैज्ञानिकता के पीछे तो बहुत से कारण हैं। बरगद का पेड़ अनादिकाल तक चलने वाला पेड़ है, ऐसे वृक्ष से उसके जैसे जीवन की आकांक्षा करना और उसकी तरह अपने परिवार की लंबी उम्र की कामना करना किसी भी प्रकार से अशुभकारी नहीं है। प्रकृति से आशीष मांगने की प्रथा सनातन काल से चली आ रही है। सावित्री वट की पूजा करती है और उसके फेरे लेकर वहीं से सत्यवान को ले जा रहे यम के साथ हो लेती है। यह कथा सिर्फ कथा नहीं है, यह जीवन का सार है। इसमें एक महिला का कर्तव्यपरायण होना, परिवारवादी होना, व्यक्ति से प्रेम की उच्चाकांक्षा और पति से प्रेम की उत्कटता का प्रदर्शन भी है। सावित्री कोई आम महिला नहीं है, वह एक उदाहरण है जो अपने पति के प्राणों के लिए यम से लोहा लेती है। यह महिला की जिजीविषा की कथा है। आज भी समाज में ऐसी कई सावित्री हैं जो अपने परिवार को बचाने के लिए संघर्षरत हैं। उन सभी महिलाओं को वट पूर्णिमा की बधाई।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी

प्रभा पाहवा

सिखों के दसवें गुरु गुरु गोविंदसिंह जी के बारे में सभी लोग जानते हैं कि उन्होंने न सिर्फ सिख धर्म की पताका फहराई बल्कि संपूर्ण राष्ट्र को एक राष्ट्र बनाने की अवधारणा भी रखी। भारत को एक राष्ट्र के रूप में एक रूप में पिरोने के लिए उन्होंने अपने पुत्रों का बलिदान दिया। उन्होंने देश और समाज में समरसता स्थापित करने के लिए बलिदान दिया। इनका जन्म पौष सुदी 7वीं सन् 1666 को पटना में माता गुजरी जी तथा पिता श्री गुरु तेगबहादुर जी के घर हुआ। कहा जाता है कि उन्होंने पटना के जिस घर में अपने जीवन के शुरुआती 4 साल बिताए वहीं आज तखत श्री हरिमंदर जी पटना साहिब स्थित है। गुरु गोबिंदसिंह जी बचपन से ही अदेय साहसी और पराक्रमी थे। उनके भीतर गजब का युद्धकौशल था। गुरु गोबिंदसिंह जी के पिता गुरु तेगबहादुर सिंह जी की मृत्यु के बाद महज 9 साल की उम्र में गुरु गोबिंदसिंह जी को सिखों का दसवां गुरु बनाया गया। दसवां गुरु बनने के बाद भी उनकी शिक्षा चलती रही और गुरु की गरिमा बनाए रखने के लिए इन्होंने कई सारी भाषाओं का अध्ययन भी किया जिसमें पंजाबी, संस्कृत, फारसी और अरबी शामिल थीं। गुरु गोविंदसिंह जी ने मुगलों के खिलाफ लड़ाई लड़ते हुए ही **सत श्री अकाल** का नारा दिया था और सिखों के खालसा पंथ की स्थापना भी की थी। सिख धर्म में पंच ककार की शुरुआत गुरु गोबिंदसिंह जी ने ही की थी। खालसा पंथ में गुरु गोबिंदसिंह जी ने पंच ककार के पांच सिद्धांत बताए थे जिनमें केश, कृपाण, कंघा, कड़ा और कच्छा शामिल हैं। गुरु गोविंदसिंह जी ने ही वाहे गुरुजी का खालसा, वाहे गुरुजी की फतेह का नारा दिया था, जिसे खालसा वाणी के नाम से जाना जाता है। गुरु गोबिंदसिंह ने अन्याय, अत्याचार और भूख से गरीबों की रक्षा के लिए मुगलों से 14 युद्ध लड़े जिसमें सरसा का युद्ध, चमकौर का दूसरा युद्ध (1704), मुक्तसर की लड़ाई शामिल हैं। वजीर खान, गुरुजी को मारना चाहता था और वो अपनी मंशा में कामयाब भी हुआ, उसने 07 अक्टूबर 1708 में गुरू गोबिन्दसिंह जी को नांदेड़ साहिब में मारने की कोशिश की और गुरुजी दिव्य ज्योति में लीन हो गए। वे एक वीर योद्धा होने के साथ-साथ एक लेखक और कवि भी थे। गुरु गोबिंदसिंह जी ने ही गुरु ग्रंथ साहिब को पूरा किया था और गुरु ग्रंथ साहिब को ही अपना अगला उत्तराधिकारी और सिख समुदाय के लोगों का मार्गदर्शक नियुक्त किया था। वे एक वीर योद्धा होने के साथ-साथ एक लेखक और कवि भी थे। गुरु गोबिंद सिंह जी ने ही गुरु ग्रंथ साहिब को पूरा किया था और गुरु ग्रंथ साहिब को ही अपना अगला उत्तराधिकारी और सिख समुदाय के लोगों का मार्गदर्शक नियुक्त किया था।

रानी लक्ष्मीबाई का प्रजा प्रेम

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई केवल वीर और साहसी महिला ही नही थी बल्कि अपनी पूजा के सुख दुःख में सदैव उसके साथ खड़ी रहती थी। वे पूरी प्रजा को अपने परिवार का सदस्य मानती थी। झांसी के पास एक गाँव है लकारा, वहाँ के बहुत से लोग झांसी की सेना में सैनिक थे। एक ऐसे सैनिक का नाम बहादुर गुर्जर था । उन्होनें देखा कि बहादुर सिंह छावनी में नहीं है। तब उन्होंने तत्काल अपने तो पची गुलाम गौस खां को बुलाया और उनसे पूछा की बहादुर काका छावनी में नहीं है वे कहाँ चले गए है।

गौस खाँ ने बताया उनकी भतीजी की आज शादी है इसलिए वे अपने गाँव गये हैं। पास में ही खड़े सेना प्रमुख ने बिना बताएं गाँव भेजने के लिये रानी से क्षमा मांगने लगे उन्हें लग रहा था कि महारानी नाराज हो जायेगी, लेकिन हुआ इससे उल्टा, उन्होने, गौस खाँ से कहा काका के गाँव में भी जाऊंगी। अब सेनापति और खाँ साहब दोनो हत्तभ्रम हो गए। लकारा में रात को 10-11 बजे के आस पास 15 घुड़सवार पहुंचे वे सीधे बहादुर सिंह गुर्जर के घर के सामने रुके। गाँव में तहलका मच गया कि शायद डाकू आ गए है। बहादुर भाला लेकर आगे बढ़े और चिल्लाये कि मेरे मेहमानों को मेरे जीते जी कोई नही लूट सकता। रानी घोड़े से उतरी बोली काका आपने क्या सोचा था कि मुझे नही बुलाओगे तो मैं नहीं आऊंगी ? मैं अपने लोगों के घर बिना बुलाये आ जाती हूँ। रानी को अपने सामने देखकर बहादुर सिंह भावुक हो गये। रानी के इसी प्रेम के कारण उनकी प्रज्ञा उनके लिए जान भी दाव पर लगाने से नही हिचकती थी।

महारानी लक्ष्मी बाई महारानी होने के बाद भी एक साधारण सैनिक के घर बिन बुलाए जाने मे कोई संकोच नही किया क्योंकि वो उन्हें अपने परिवार एक सदस्य मानती थी। इसी अपनेपन के कारण सारी सेना उनके लिए जान भी देने के लिए हमेशा तैयार रहती थी। इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई का नाम आज भी अमर है।

धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा का संघर्ष और बलिदान

संदीप चौहान

अबुआ दिशोम रे अबुआ राज और **उलगुलान** का नारा हमने कहीं न कहीं पढ़ा या सुना जरूर होगा। यह नारे भारत के वीरपुत्र **धरती आबा** अर्थात् **धरती पिता** भगवान बिरसा मुंडा ने दिए थे। झारखंड के खूंटी जिले के उलिहातू गाँव में 15 नवंबर 1875 को गरीब आदिवासी परिवार में जन्मे बालक बिरसा ने कौन से ऐसे कार्य किये, जिसकी वजह से आज भी समस्त भारतीय उनका नाम आदर के साथ लेते हैं। दरअसल ईसाई धर्म के प्रचार के लिए अंग्रेजों ने आदिवासी क्षेत्रों का रूख भी किया और धर्म परिवर्तन करवाने में वे सफल भी हुए।

सुगना मुंडा एवं करमी मुंडा के घर बालक बिरसा का जन्म हुआ था। बिरसा के पिता ने ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया था। यहाँ तक कि वे ईसाई धर्म प्रचारक भी रहे थे। बालक बिरसा भी ईसाई हो गए। मिडिल की पढ़ाई के लिए बालक बिरसा चाईबासा के मिशनरी स्कूल में चले गए। इस स्कूल में बिरसा मुंडा ने ईसाई मिशनरियों को ईसाई धर्म की सर्वोच्चता बताते हुए और अन्य धर्म खासकर मुंडा प्रथाओं और संस्कृति की आलोचना करते हुए पाया। 1886 से 1890 तक बिरसा चाईबासा में सरदारों के बीच रहे। ये सरदार अपने जंगल के अधिकार अंग्रेजी सरकार से मांग रहे थे, जो अंग्रेजों ने विभिन्न जंगल कानूनों की मदद से आदिवासियों से छीन लिए थे। इसी बीच बिरसा वैष्णव धर्म के प्रभाव में आए। इससे उन्हें सामाजिक कुप्रथाओं को दूर करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। अंग्रेजी सरकार और मिशनरियों की साजिशों को युवा बिरसा समझने लगे थे, इस कारण उन्होंने ईसाई धर्म छोड़ दिया और सामाजिक सुधार आंदोलन चलाने लगे। उन्होंने मुंडाओं से कहा कि शराब पीना छोड़ दें, जादू-टोना, डायन आदि अंधविश्वासों का त्याग कर स्थायी रूप से कृषि कार्य करें। कुदरत के साथ सामंजस्य स्थापित कर जीवन यापन करें तथा आपस में प्रेमभाव से रहें। धीर-धीरे बिरसा के प्रभाव में लोग आने लगे तथा मिशनरियों के प्रभाव से मुक्त होकर बिरसा के विचारों को ग्रहण करने लगे और बिरसा के नेतृत्व में अंग्रेज़ों की नीतियों के खिलाफ मुंडा विद्रोह करने लगे। 1 अक्टूबर 1894 को बिरसा मुंडा ने सभी मुंडाओं से राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत की पुनर्स्थापना के लिए अंग्रेजी सरकार के खिलाफ **उलगुलान** करने का आव्हान किया। उलगुलान से तात्पर्य संपूर्ण क्रांति से था।

लोगों को सरकार के खिलाफ भड़काने के आरोप में अंग्रेजों ने बिरसा मुंडा को गिरेतार कर दो वर्ष की सजा सुनाई। इसी बीच 1897 में झारखंड में भीषण अकाल पड़ा । 30 नवंबर 1897 को बिरसा जेल से रिहा हुए और रिहा होने के बाद अकाल पीड़ितों की मदद करने लगे। वे गाँव-गाँव घूमकर लोगों को सामाजिक कुप्रथाओं के खिलाफ जागरूक करते और उन्हें सदाचारी जीवन जीने की प्रेरणा देते थे। 5 जनवरी 1900 तक मुंडाओं ने सशस्त्र विद्रोह कर दिया और झारखंड के लगभग सभी आदिवासी क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया तथा अबुआ दिशुम यानि स्वराज की घोषणा कर दी। अंग्रेजों ने सेना भेजकर बिरसा मुंडा की गिरफ्तारी के लिए 500 रुपये का इनाम रखा। सेना ने डुम्बारी पहाड़ी पर भीषण जनसंहार किया। करीबी व्यक्ति की मुखबिरी के कारण 3 फरवरी 1900 को बिरसा चक्रधरपुर से गिरफ्तार हुए और 9 जून की सुबह खून की उल्टी कर बिरसा की मृत्यु हो गई। सरकार ने मौत का कारण हैजा बताया था, लेकिन कहा जाता है कि उनकी मृत्यु धीमा जहर देने के कारण हुई थी।

मात्र 25 वर्ष की उम्र में बिरसा सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक चेतना का संचार भारतीयों में कर गए और अपने देश और धर्म की रक्षार्थ बलिदान का संदेश दे गये तथा आने वाली पीढ़ियों में वे अन्याय और शोषण के खिलाफ उलगुलान के बीज अंकुरित कर गए। **जीवन लंबा नहीं सार्थक होना चाहिए।** इस उक्ति को बिरसा मुंडा चरितार्थ कर गए।

हिंदू साम्राज्य दिनोत्सव

डॉ. सुब्रतो गुहा

हिन्दू हृदय सम्राट छत्रपति शिवाजी का जन्म महाराष्ट्र प्रान्त के शिवनेरी दुर्ग में दिनांक 16 अप्रैल 1627 को हुआ था। एक ओर जहाँ पिता शाहजी भोंसले से प्रशासनिक कार्य की सीख तथा माता जीजाबाई से धर्म-संस्कृति के प्रति निष्ठा की शिक्षा मिली, वहीं दूसरी ओर गुरू दादाजी कोंडदेव से शस्त्र और शास्त्र की शिक्षा मिली। सनातन हिन्दू धर्म की यह मान्यता रही है कि जब-जब शास्त्र अर्थात धर्म- संस्कृति पर संकट आता है- तब-तब शस्त्र अर्थात् हथियारों की सहायता से ही धर्म की रक्षा संभव होती है। बाल्यकाल से ही मावले वनवासी बालकों के साथ सह्याद्री पर्वत की तलहटी में खेलते हुए बड़े हुए युवा शिवाजी के मन में जातिगत ऊँच-नीच का कोई भाव नहीं था और वे सामाजिक समरसता के प्रति निष्ठा रखते थे। चारों ओर मुस्लिम शासकों के हरे ध्वज देख युवा शिवाजी ने अपने मावले साथियों के साथ मां भवानी के मंदिर में शपथ ली कि शीघ्र ही इन हरे ध्वजों को हटाकर भगवा ध्वज फहरा देंगे। शीघ्र ही उन मावले युवाओं की सहायता से एक छोटी सेना का गठन कर अपने स्वप्न को साकार करने की दिशा में बढ़ते चले गए।

शिवाजी की यशस्वी विजय यात्रा का शुभारंभ सन् 1646 में हुआ जब केवल उन्नीस वर्ष की आयु में वीर शिवाजी ने अपनी छोटी सेना का नेतृत्व करते हुए तोरणा का किला जीता और उसपर भगवा ध्वज फहरा दिया। इसके बाद शिवाजी एक-एक कर चालीस किलों को जीतकर अपने हिन्दवी साम्राज्य का विस्तार करने में सफल हुए। बीजापुर, गोलकुन्डा, बीदर और बेरार के बहमनी सुलतानों को अनेक युद्धों में परास्त करने के साथ ही शिवाजी ने अफजल खान को सन् 1659 में पराजित कर उसका वध किया तथा सन् 1663 में मुगल शहंशाह औरंगजेब द्वारा भेजे गए सेनापति शाईस्ता खान और उनकी सेना को पराजित किया। कट्टर जिहादी मानसिकता वाले औरंगजेब ने हिन्दू वीर शिवाजी को कुचलने का भरसक प्रयास किया, परन्तु असफल रहे। आखिरकार 16 जून सन् 1674 का वह ऐतिहासिक दिवस आया जब रायगढ़ के किले में चक्रवर्ती सम्राट के रूप में उनका राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने हिन्दू पद पादशाही की स्थापना की। वैसे तो विक्रमादित्य, समुद्रगुप्त, हर्षवर्धन इत्यादि कई हिन्दू राजाओं ने चक्रवर्ती सम्राट बनने का गौरव प्राप्त किया था- तथापि शिवाजी का चक्रवर्ती सम्राट बनना विशेष उपलब्धि माना गया है क्योंकि भारत के बड़े हिस्से पर इस्लामी शासन की प्रतिकूल परिस्थिति में शिवाजी ने हिन्दुत्व का भगवा परचम फहराया और हिन्दू पद पादशाही के संस्थापक बने। इसके पूर्व कई शताब्दियों तक इस्लामी शासकों के विदेशी शासन में अत्याचार पीड़ित हिन्दू नर-नारियों में हताशा, निराशा और ग्लानि का भाव इस सीमा तक समा चुका था कि अनेक हिन्दू दिल्लीश्वर, जगदीश्वर अर्थात ईश्वर का रूप है- जैसे मूर्खतापूर्ण सिद्धांत पर विश्वास करने लगे थे।

छत्रपति शिवाजी द्वारा ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में चक्रवर्ती सम्राट बनकर हिन्दू पद पादशाही की स्थापना से समूचे भारतवर्ष के समस्त हिन्दू नर-नारियों के मन से ग्लानि का भाव मिट गया और अपनी धर्म-संस्कृति के प्रति गर्व का भाव विकसित हुआ। इसी तथ्य का स्मरण करते हुए प्रतिवर्ष 16 जून को कृतज्ञ हिन्दू समाज हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव के रूप में मनाता है। छत्रपति शिवाजी महाराज सत्रहवीं शताब्दी के हिन्दुओं के लिए प्रेरणास्त्रोत थे, हिन्दू हृदय सम्राट थे, आज की पीढ़ी के लिए भी हैं और अनंत काल तक हिन्दू हृदय सम्राट बने रहेंगे। उनके चरणों में शत-शत नमन।

बोध कथा

सेवा एक अमूल्य पुरस्कार

रायगढ़ का किला, शिवाजी के राज्यारोहण की बेला, समारोह सम्पन्न हो रहा है। आज के दिन सेनानी अथवा अन्य कोई अनुत्साहित न रहे, किसी का भी मन सूना न रहे, रिक्त न रहे, सब ओर सही प्रयास चल रहा था। अचानक शिवाजी महाराज ने हीरोजी से पूछा, ''अरे ! वह नहीं दिखा?'', तब लपक कर हीरोजी उसे बुला लाया। वह था मदारी महतर- अठारह वर्षीय एक विनम्र तरूण।

उसने आते ही महाराज को अभिवादन किया और उस भरे दरबार में संकोच के साथ दोनों हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। 'तुझे क्या दूं?', शिवाजी ने पूछा। मदारी मौन, जैसे कह रहा हो कि, आपका स्नेह बना रहे, मैं सबकुछ पा गया। सभी दरबारी सोचने लगे कि अब यह धन, दौलत या सादरी मांगेगा। बड़ा भाग्यशाली है। आखिर आगरा की कैद में शिवाजी का विश्वस्त अनुचर जो रहा है। मांगो! महाराज उस पर अतिप्रसन्न हैं- आखिर हों भी क्यों न, उसने अपने प्राणों पर खेलकर देश कार्य में हाथ बंटाया था।

बड़ी कठनाई से उसका मुंह खुला 'महाराज! आज मुझे आपके चरणों के निकट बैठने की आज्ञा मिले' मेरे पास ही तो है, तू कुछ और मांग, शिवाजी ने दोहराया। तो मेरी यह मुराद पूर्ण हो महाराज! कि आपके स्वर्ण सिंहासन की स्वच्छता, रोज चादर बिछाने, सहेजने की सेवा मुझे मिले। हिन्दवी स्वराज्य के सिंहासन पर यह अस्पृश्य चादर बिछायेगा, सभी सरदारों की भौहे टेढ़ी हो गई। 'सेवा और समर्पण से बढ़कर संसार में कुछ नहीं। मानव की गरिमा की कसौटी कर्म है' शिवाजी की धीर-गम्भीर वाणी ने सभी सरदारों को ठण्डा कर दिया। मदारी मेहतर जीवन भर शिवाजी के निकट रहा तथा स्वर्ण सिंहासन की स्वच्छता का अधिकार भी जीवन भर उसी का रहा।

बखत की कीमत

डॉ. शशि गुप्ता

बखत की कीमत जीने हे जाणी
ऊ की बणी गई समझो जिन्दगाणी

अर्जुन ने बखत पे लगायो निसाणो
इकमेज नामी धनुर्धर के वाणो

बखत पे रामजी ने शिव-धनुष तोड़्यो
सीता-स्वयंवर में हथलेवो जोड़्यो

कृष्णजी बखत पे नी दोड़ी के आता
तो किस तर द्रोपदी की लाज बचाता

बखत पे रामजी नी वचन निभाता
केकई के दशरथजी मुँडो कँई बताता

हनुमानजी बखत पे नी संजीवनी लाता
तो किस तर लछमण की मुरछा मिटाता

बखत पे नी सेनिक निसाणो लगाय
तो सोचो, दुसमन के किस तरे भगाय

कीमत बखत की जीने नी जाणी
तो पड़ेगी कीमत उकेज चुकाणी

बखत की बखत पेज होय पेचाण
इकसेज पेचाण्यो जाय इनसान

मनक नी करे बखत पे हे राज
इकसेज बखत को रे हे मोहताज

कबीर की भक्ति

हरीश गिदवानी

भक्ति शब्द भज् धातु से लिया गया है और इसी भज धातु से भजन की उत्पत्ति भी हुई। भज धातु के शाब्दिक अर्थ को देखें तो भज का अर्थ होता है **सेवा करना**। हमारी भारतीय संस्कृति में सेवा बहुत ही महत्वपूर्ण है। वैदिक काल से ही भक्ति में लीन हमारी सभ्यता उस परमपिता की सत्ता को स्वीकार करती आई। परमात्मा की उपासना करने के कई तरीके ढूंढे गए।

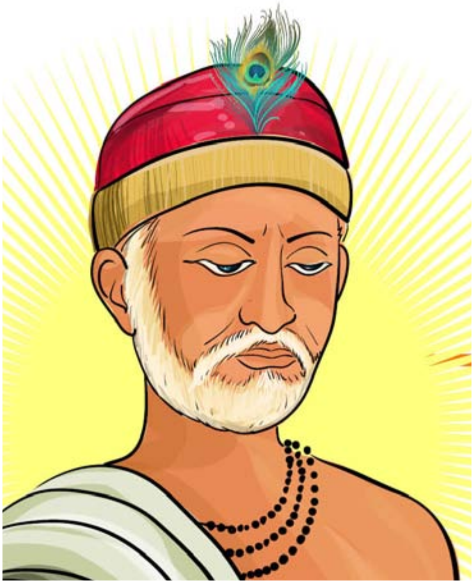

प्रभु की उपासना का एक तरीका भक्ति खोजा गया। भक्ति को हमेशा भावना से जोड़ा गया। भाव जो अंदर से उठें, भाव जो मन की गहराइयों से उठें, वही तो भावना बन जातें हैं। भावना के बिना भक्ति कैसी? गुरुनानक ने गाते-गाते उस परमेश्वर का पता ढूंढ लिया। मीरा ने मंदिरों में नाचते-नाचते कान्हा को पाया। रैदास ने जूते बनाते -बनाते अपनी लौ उस प्रभु से लगाई। जुलाहे कबीर ने कपड़ा बुनते -बुनते परमात्मा को पाया। इन सबकी भक्ति भाव सहित थी। कहीं कोई आडंबर या कर्म काण्ड नहीं। बस मन में एक ही लगन, एक ही भाव कि उस परम पिता को पाना है।

हिंदी साहित्य में कबीर भक्ति काल की निर्गुण शाखा के ज्ञान मार्ग के प्रमुख कवि माने जाते हैं। कबीर ने लोगों को झिंझोड़ा। कबीर अपने दोहों के द्वारा,अपनी वाणी के द्वारा लोगों को हर पल जगाने की कोशिश करते रहे। समाज में व्याप्त विसंगतियों के विरोध के अतिरिक्त यह जुलाहा उस परम पिता को प्राप्त करने का प्रयत्न भी करता रहा। कबीर के दोहों में उन लोगों के लिए लगातार आलोचना का भाव आता रहा जो बाहरी कर्मकांड द्वारा ईश्वर को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। कबीर की भक्ति में जो भाव सर्वाधिक दृष्टिगोचर होते हैं वह हैं प्रेम और समर्पण। कबीर हमेशा परमात्मा के प्रति प्रेम और समर्पण की बातें करते रहे, अपना सर्वस्व न्यौछावर करने की बात करते रहे। समर्पण पाना नहीं है, समर्पण तो अपने आप को सौंपना है और सौंपने के बाद जो अनुभूति प्राप्त होती है उसका आनंद समर्पित आत्मा से बेहतर कौन जान सकता है। कबीर वह समर्पित आत्मा हैं जो सिर्फ सौंपने की बात करती है, कुछ चाहती नहीं। यह आत्महीन आत्मा कह उठती है-

मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा,
तेरा तुझको सोंपते, क्या लागे है मेरा।।

कबीर पूरी तरह से उस परमपिता में लीन हो जाते हैं जहां परमात्मा के अतिरिक्त कोई नहीं-

आठ पहर चौंसठ घड़ी मेरे और न कोए
नैना माहीं तुम बसे, नींद को ठौर न कोए।।

परमात्मा कुछ इस तरह कबीर के शरीर में रच बस गया है कि वह लिखते हैं-

प्रीतम को पतिया लिखूं जो कोई होए बिदेस।
तन में, मन में, नैन में, कहां करूं संदेस।।

कबीर का प्रियतम तो कबीर की रग-रग में बसा है अपने प्रियतम को दुनिया से छुपाने का भाव रखते हुए वह कहते हैं-

नैनन अंतर आव तो नैन झाँप तोहे लूं
ना हौं देखूं और को न तोहे देखन दूं।।

अपने इस प्रियतम को रिझाने के लिए कबीर नित नए जतन भी करते हैं। अपने नैनों को कोठरी बनाकर पुतली को पलंग बनाकर बिछाने जैसे सारे जतन करते हैं। वह लिखते हैं-

नैनन की कर कोठरी, पुतली पलंग बिछाए
पलकों की चिक डारी के, पिय को लिए रिझाए।।

भक्ति के लिए कबीर अपने अहम् को त्यागने के लिए कहते हैं

ये तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहीं
सीस उतारे भूमि धरै, तब पैठे घर माहीं।।

कबीर का प्रेम सर्वस्व न्यौछावर चाहता है,वह कहते हैं,

प्रेम न बाड़ी उपजै प्रेम न हाट बिकाय
राजा प्रजा जो भी रुचै सीस देइ ले जाय।।

कबीर परमात्मा को पाने की अपनी लालसा को समुद्र की प्यासी सीप के उदाहरण से व्यक्त करते हैं -

कबीरा सीप समुद्र की रटे प्यास प्यास
और बूंद को ना गिहे स्वाति बूंद की आस।।

कबीर परमपिता को पाने के पश्चात् की मनःस्थिति को कुछ इस तरह व्यक्त करते हैं।

जैविक खेती का महत्व

डॉ. गोपाल राठौर

भारत में जनसंख्या वृद्धि एक बड़ी समस्या है। जनसंख्या वृद्धि से, भोजन की आवश्यकता बढ़ रही है। खाद्य उत्पादन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए रासायनिक उर्वरकों

और जहरीले कीटनाशकों का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। जिससे मानव स्वास्थ्य और प्रकृति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। जैविक खेती खुद को और प्रकृति को घातक रसायनों से बचाने का एकमात्र तरीका है।

भारत में जैविक खेती एक पारंपरिक कृषि पद्धति है, जिसमे जैविक खाद, जैव-उर्वरकों और जानवरों या पौधों के कचरे से प्राप्त उर्वरक/कीट नियंत्रण का उपयोग होता है। इस खेती ने रासायनिक कीटनाशकों और सिंथेटिक उर्वरकों के कारण होने वाली पर्यावरणीय पीड़ा का जवाब देना शुरू कर दिया। यह कृषि की एक नई प्रणाली है जो पारिस्थितिक संतुलन की मरम्मत, रखरखाव और सुधार करती है। जैविक/जैव-उर्वरक पौधों के पोषक तत्वों के पर्यावरण के अनुकूल और लागत प्रभावी नवीकरणीय स्रोत हैं जो उर्वरकों के पूरक हैं। जैव-उर्वरकों में जीवित या अव्यक्त सूक्ष्म जीव कोशिकाएं होती हैं जो वायुमंडलीय पोषक तत्वों को ठीक करने में सक्षम होती हैं या पौधों के अवशोषण के लिए अघुलनशील पोषक तत्वों को घोलती हैं। वे मिट्टी में पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाने के लिए भी उत्कृष्ट हैं। जैविक खेती में स्वस्थ फसलों का उत्पादन होता है जिससे जानवरों और लोगों के स्वास्थ्य को बढ़ावा मिलता है।

जैविक खेती के मूल सिद्धांत -

जैविक खेती के दृष्टिकोण में निम्नलिखित पाँच सिद्धांत शामिल हैं-

1. पारंपरिक प्रबंधन से जैविक प्रबंधन में भूमि का रूपांतरण
2. सिस्टम की जैव विविधता और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए पूरे आसपास के सिस्टम का प्रबंधन।
3. फसल चक्र, अवशेष प्रबंधन, जैविक खाद और जैविक आदान जैसे पोषक तत्वों के वैकल्पिक स्रोतों के उपयोग से फसल उत्पादन।
4. बेहतर प्रबंधन पद्धतियों, भौतिक और सांस्कृतिक साधनों और जैविक नियंत्रण प्रणाली द्वारा खरपतवारों और कीटों का प्रबंधन
5. जैविक अवधारणा के साथ पशुधन का रखरखाव और उन्हें संपूर्ण प्रणाली का एक अभिन्न अंग बनाना।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

भारतीयता में है पर्यावरण की चिंता करना

हेमा शिवेन्द्र सिंह

मार्च में बारिश, मई में बारिश.......कभी सर्दी तो कभी गर्मी तो कभी बारिश, लगभग पूरे साल इसी प्रकार का माहौल बना हुआ है। भारत में हर मौसम का अपना आनंद है और ऋतुओं के अनुसार अपने आप को ढालने वाले आज परेशान है। खराब होता स्वास्थ्य और बीमारियों की बढ़ती संख्या से सभी परेशान हैं। विज्ञान और तकनीक में विकसित होने वाली मानव सभ्यता आज भी प्रकृति के प्रति उदासीन है। उन्हें यह समझने में अब भी समय क्यों लग रहा है जब प्रकृति अपने भयावह स्वरूप के साथ सभी के सामने है। पर्यावरण में प्रदूषण की समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। वायु, जल, भूमि, मिट्टी, सभी तत्वों में प्रदूषण पसरा हुआ है। कुछ भी बाकी नहीं बचा है। नदियां, समुद्र, पर्वत, भूमि सर्वत्र परेशानी है। इसके कारण मानव स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। 1950 से लेकर अब तक बहुत से प्रयोग और परीक्षण जारी हैं। परंतु कोरोना ने सभी परिवर्तनों और प्रयोगों को धता बताकर बता दिया कि प्रकृति के साथ खिलवाड़ कितना भयंकर हो सकता है। हमारी प्राचीन और पारंपरिक जीवन शैली में पर्यावरण की चिंता सदा से थी। पर्यावरण यानी हमारी प्रकृति का आवरण। प्रकृति के पंच महाभूत कहें या पंच देवता क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर के साथ भगवान श्रीकृष्ण ने 8 तत्वों का भी उल्लेख किया। इनमें भूमिरापोनलो वायु खं मनो बुद्धि रेव च। अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा। ऐसे ही वेदों में भी प्रकृति और उसके द्वारा प्रदत्त संसाधनों का विस्तृत विवरण है। चारों वेदों में भिन्न स्वरूपों में इन तत्वों की व्याख्या करके उनके संरक्षण के लिए जन-जागरण का भी चिंतन मिलता है। सूर्य को आत्मा, पिता और पृथ्वी को माता मानने वाले इन वेदों में अंतरिक्ष की चिंता तब भी गई थी, यह विचार आश्चर्यजनक लगता है। वर्तमान जन इन सभी बातों को विज्ञान की देन मानते हैं परंतु भारतीय चिंतन अपने उद्भव से ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ चल रहा है। वर्तमान में वातावरण में परिवर्तन से लगभग सभी चिंतित और भयभीत हैं। कुछ साधारण बिंदुओं को अपने जीवन में अमल करके हम इस वातावरण को अपने अनुकूल रख पाएंगे।

100 प्रतिशत ग्रीन पावर पर काम करें- इसके लिए ग्रीन हाउस का निर्माण करें।

सेव एनर्जी - वर्तमान में उपलब्ध बिजली की खपत को कम करने के लिए वैकल्पिक संसाधनों पर निर्भरता बढाएं। पारंपरिक संसाधनों के लिए लोगों में जागरूकता का निर्माण करें।

खानपान में बदलाव - ऐसे आहार को बढ़ावा दिया जाए जिससे लोगों में सादा जीवन, उच्च विचार का मसला बढ़े। लोगों को शाकाहार की तरफ प्रेरित किया जाए जिससे पर्यावरण में संतुलन बना रहे। लोगों में तामसिक भोजन की ललक को कम करने के लिए अभियान चलाया जाए।

प्लास्टिक को प्रतिबंधित करें - दैनिक जीवन में से प्लास्टिक के उपयोग को समाप्त करने का प्रयास करें।

शेयरिंग इज़ केयरिंग - इसका अर्थ है कि जो भी प्राकृतिक संसाधन हैं उनकी देखभाल करें। हमें जो भी प्रकृति ने प्रदान किया है उनके संरक्षण की चिंता करते रहें।

डिजीटल फुटप्रिंट को कम करें - ई-गारबेज अर्थात इलेक्ट्रॉनिक साधनों के उपयोग में मितव्ययता का भाव रखें। एक ही फोन और एक ही कम्प्युटर से काम करें।

उड़ान कम करें - वायु और आकाश को बचाने के लिए हमें हवाई यात्राओं को भी कम करना चाहिए।

सतत विनिवेश को बनाएं - ऐसे कामों में धन का निवेश किया जाए जिससे लंबे समय तक विकास संभव हो सके। सतत विकास की उन सभी मदों में विनिवेश को बढ़ावा दिया जाए जिसके साथ हम समाज में हो रहे परिवर्तनों को अधिक समय तक देख सकें।

साइकिल चलाएं - वाहनों में ऐसे दो पहिया वाहनों का उपयोग करें जिसमें ईंधन की बचत होती हो। अपनी साइकिल जिंदाबाद के साथ छोटी दूरी के लिए साइकिल का उपयोग बढ़ाएं।

जंगल और पेड़- एक आदमी एक पेड़ की बात नहीं बल्कि एक आदमी एक जंगल बनाने की कल्पना तो करें वह किसी स्तर पर तो साकार होगी।

नागरिक बनें ना कि उपभोक्ता - हम अपने देश के नागरिक बनें ना कि उपभोक्ता। सिर्फ उपभोक्तावादी विचारधारा को ना अपनाएं। ऐसी वस्तुओं का त्याग करने का जज्बा रखें जिससे देश और हमारे वातावरण को हानि पहुंचती हो।

अपनी आवाज को बुलंद करें - वातावरण, पर्यावरण और इससे जुड़े मसलों पर अपनी आवाज को कठोरता के साथ रखें। इसमें मुलाहिजा करने से आगामी पीढ़ी को बहुत तकलीफों को सामना करना पढ़ सकता है।

योग बने जीवन का हिस्सा

कवि राकेश दांगी

योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के युज् धातु से हुई है, जिसके दो अर्थ हैं एक है जोड़ना और दूसरा अनुशासन। ऐसा माना जाता है योग पौराणिक एवं प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति का हिस्सा है। भारतीय ऋषि-मुनियों ने योग के द्वारा परमात्मा को भी प्राप्त किया है। स्वस्थ जीवन, मन की शांति हेतु योग को जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाना वर्तमान युग की आवश्यकता है। कोरोना काल में योग को काफी प्रसिद्धि मिली। दुनिया के अनेक देशों ने योग के महत्व को समझते हुए कोरोना महामारी के समय योग को अपनाया एवं योग के प्रभाव को भी प्रत्यक्ष अनुभव किया। सम्पूर्ण विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा था। उस समय भारत में लगभग 60 प्रतिशत लोगों ने योग के माध्यम से अपने आप को सुरक्षित महसूस किया। कोरोना महामारी के चलते लोगों ने चिंता, अवसाद जैसी मनोवैज्ञानिक मानसिक समस्या का भी सामना किया। जो मानवता के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी। उस समय योग मानवता के लिए वरदान साबित हुआ

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर योग की शुरुआत- भारत में तो योग का इतिहास सदियों पुराना है। परंतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर योग का इतिहास ज्यादा पुराना नहीं है। वर्ष 2014 में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में योग की पहल की,11 दिसंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इस प्रस्ताव को पूर्ण बहुमत से पारित किया।193 सदस्य देशों में से 177 देशों ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने के प्रस्ताव को ध्वनिमत से पारित किया।

21 जून को ही क्यों - 21 जून को उत्तरी गोलार्द्ध का सबसे लंबा दिन होता है, जिसे ग्रीष्म संक्रांति कहते हैं, भारतीय परंपरा के अनुसार ग्रीष्म संक्रांति के पश्चात् सूर्य दक्षिणायन होता है। भारतीय परंपरा में ऐसा माना जाता है, कि सूर्य दक्षिणायन का समय आध्यात्मिक सिद्धियां प्राप्त करने के लिए अनुकूल होता है। इसी के आधार पर योग दिवस 21 जून को मनाने को निर्णय लिया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का प्रारंभ 21 जून 2015 से हुआ।

योग के लाभ- रोग मुक्ति-योग शरीर को स्वस्थ रखता है। रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है। मधुमेह, हृदय,अस्थमा, श्वसन संबंधी बीमारियों में योग अत्यधिक लाभदायक है। तनाव, चिंता, भय मानसिक शांति के लिए भी नियमित योग करना आवश्यक है।

मन की शांति - योग उत्तम स्वस्थ ही नहीं अपितु वर्तमान समय की भागदौड़ भरी जिंदगी में मन की शांति के लिए भी सहायक सिद्ध हुआ है। भूख एवं पाचन क्रिया को भी योग के द्वारा दुरुस्त किया जाता हैं।

तनाव मुक्त जीवन - अध्ययनों से यह पाया गया कि वर्तमान में हर दूसरा व्यक्ति तनावपूर्ण जीवन जी रहा है। इसके समाधान में भी योग को उपयोगी माना गया है।

मोटापा से मुक्ति - विश्व की लगभग 70 से 80 प्रतिशत आबादी मोटापे से पीड़ित है। योग अत्यधिक चर्बी में नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

एकाग्रता- विद्यार्थियों को नियमित योग द्वारा एकाग्रता को स्थिर रखने में सहायता मिलती है। मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक रूप में स्वस्थ रहने के लिए योग को नियमित जीवन का हिस्सा बनाना अति आवश्यक है।

खंडवा में हिन्दू दामाद की...उसके मुस्लिम सास, ससुर और साले ने की हत्या, अपनी पत्नी और बेटी को ससुराल से घर लाने गया था।

राजस्थान के सीकर जिले से जितेंद्र उर्फ़ राजू सैनी तीन साथियों के साथ 3 साल पहले एक होटल पर काम करने आया था। राजू सैनी की मुलाकात खंडवा की अमरीन से हुई। दोनों में पहले बातचीत हुई और बाद में प्यार हो गया। राजू और अमरीन ने शादी कर ली। शादी के बाद राजू सैनी अमरीन को ले कर सीकर स्थित अपने गाँव खण्डेल चला गया।

कुछ समय बाद अमरीन एक बेटी की माँ बन चुकी थी। पुलिस ने परिवार द्वारा अमरीन की गुमशुदगी की रिपोर्ट पर उसे खोजकर कोर्ट में पेश किया। अदालत में अमरीन ने खुद को बालिग बताते हुए राजू सैनी के ही साथ रहने की इच्छा जताई। कोर्ट ने भी दोनों को एक साथ रहने की अनुमति दे दी थी।

कुछ समय बाद अमरीन ने अपने मायके वालों से मिलने की इच्छा जताई। इस पर राजू सैनी ने उसे उसके मायके लाकर छोड़ दिया। थोड़े समय बाद जब राजू अपनी बेटी और बीवी को लेने ससुराल गया, तब उसे भगा दिया गया। राजू ने स्थानीय थाना पिपलौद में इसकी शिकायत दर्ज करवाई, लेकिन उसकी गुहार पर ध्यान नहीं दिया गया। इसके बावजूद राजू लगभग 25 दिनों तक अपनी ससुराल सिंगोट के आसपास ही रहा। वह अपनी तरफ से अपनी बेटी और बीवी को वापस पाने की कोशिशें करता रहा।

स्थानीय सूत्रों के अनुसार 13 मई को राजू अपनी ससुराल गया। यहाँ उसने अपनी बीवी और बेटी को साथ भेजने की माँग की। आरोप है कि राजू को उसकी सास मुन्नी, ससुर मुमताज और साले ने बेरहमी से पीटा। इस पिटाई से राजू की हालत खराब हो गई। वह पिपलौद थाने पहुँचा, जहाँ उसकी शिकायत फिर से नहीं सुनी गई। राजू को उसी दिन जिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया। इलाज के दौरान 16 मई को उसने दम तोड़ दिया। हिंदू जागरण मंच ने पुलिस पर लापरवाही का आरोप लगाया है। खंडवा के स्क्रसत्येंद्र कुमार के मुताबिक मृतक के सास, ससुर और साले के खिलाफ हत्या का केस दर्ज कर जाँच की जा रही है। अब तक 2 आरोपितों को हिरासत में लिया गया है, जिनसे पूछताछ की जा रही है।

वहीं हिन्दू जागरण मंच के कार्यकर्ता इस विषय पर सक्रिय हो गए हैं और अपराधियों के विरुद्ध कठोरतम कार्यवाही की मांग कर रहें हैं। मृतक के पिता ने भी कहा है कि दोषियों के विरुद्ध कठोरतम कार्यवाही हो और उनके परिवार को न्याय मिले।

शादी में दूल्हा बने मध्यमवर्गीय युवा कमलेश ने फिजूलखर्ची के बजाय शहीदों के लिए दान किए 1,11,111/- रुपए

आजकल शादी समारोह की भव्यता पर लाखों, करोड़ों रुपये खर्च किए जाते हैं। युवा अपनी शादी को यादगार बनाने के लिए कई अनूठे उपक्रम करते हैं। लेकिन भैरूंदा निवासी युवा कमलेश यादव ने अपने विवाह अवसर पर एक नई परंपरा की शुरुआत की है जिसकी चर्चा व प्रशंसा पूरे क्षेत्र में जोरों पर है।

मध्यमवर्गीय परिवार से आने वाले कमलेश ने अपनी शादी में फिजूलखर्ची न करते हुए **1,11,111/- रुपए** की राशि देश में शहीदों व उनके परिवार के लिए कार्य करने वाले शहीद समरसता मिशन को दान की है।

'संघ का शिक्षा वर्ग तपस्यास्थली है, यहाँ हमको तपकर निकलने का अवसर मिलता है'

उज्जैन, 16 मई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, मध्य क्षेत्र के संघ शिक्षा वर्ग, द्वितीय वर्ष (सामान्य) का शुभारंभ लोकमान्य तिलक विद्यालय परिसर में मध्य क्षेत्र के क्षेत्र संघ चालक श्री अशोक सोहनी एवं रामानुज कोट, उज्जैन के पीठाधीश्वर श्री रंगनाथाचार्य जी महाराज एवं वर्ग के सर्वाधिकारी श्री चरणजीत सिंह कालरा, वरिष्ठ व्यवसायी, उज्जैन द्वारा भारत माता के चित्र के सेमुख दीप प्रज्वलित कर किया गया।

इस अवसर पर श्री अशोक सोहनी, क्षेत्र संघ चालक, मध्य क्षेत्र ने संघ के शिक्षा वर्ग में मध्य क्षेत्र के अलग-अलग प्रांतों से आये शिक्षार्थियों को संबोधित कर कहा कि संघ के शिक्षा वर्ग में रहना बहुत आसान बात नहीं है। यह शिक्षा वर्ग हमको तप कर निकलने का अवसर देता है।

21 दिन वर्ग तपस्या में लीन रहेंगे प्रशिक्षार्थी

संघ शिक्षा वर्ग, द्वितीय वर्ष (सामान्य) 15 मई से 5 जून 2023 तक चलेगा। 21 दिवसीय शिक्षा वर्ग में मध्य क्षेत्र (मध्यप्रदेश/छत्तीसगढ़) के मालवा, मध्य भारत, महाकौशल और छत्तीसगढ़ प्रांत से कुल 332 प्रशिक्षणार्थी सहभागी हुए। जिन्हें 53 शिक्षक प्रशिक्षण देंगे। सभी प्रशिक्षार्थी अपने स्वयं के खर्चे से वर्ग में पहुंचे हैं और निर्धारित शुल्क जमाकर वर्ग प्रशिक्षण प्राप्त करने में लीन रहेंगे।

धार्मिक नगरी उज्जैन में ईसाई हो चुके चार लोगों ने फिर अपनाया अपना मूल हिंदू धर्म। कहा गलतियां हो गई थीं अब सही राह पर आ गए हैं।

धार्मिक नगरी उज्जैन में चार लोगों ने ईसाई धर्म को छोड़कर वापस अपना सनातन धर्म अपनाया। महामंडलेश्वर सुमनानंद जी की उपस्थिति में विधि-विधानपूर्वक ईसाई बन चुके चारों की **घर वापसी** कराई गई। सभी ने कहा कि कुछ गलतियों के कारण, कुछ समय के लिए सनातन से दूर हो गए थे, एक बार फिर सही राह पर आ गए हैं।

स्वेच्छा तथा विधि-विधान से की घर वापसी

शिप्रा तट पर स्थित मौनी तीर्थ पीठ में महामंडलेश्वर सुमनानंद गिरि के सान्निध्य में किसी कारण ईसाई हो चुके चार लोगों ने पुनः अपना हिंदू धर्म अपनाया और सनातन धर्म के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। विधि-विधान से मंत्रोच्चार के साथ अनुष्ठान भी किया गया। इस अवसर पर सुधाकर पुरी महाराज, स्वामी सत्यानंद महाराज भी उपस्थित थे।

मिलें सनातनी नाम, हुई खुशी

हेमंत पॉल ने बताया कि हेमंत प्रजापति बनने से उन्हें काफी खुशी मिली है। इसके अलावा डेनियल और रमेश ने भी नया नाम और धर्म मिलने से हर्ष जताया। उन्होंने कहा कि सनातन धर्म के मार्ग पर चलकर कभी भी कोई गलत कार्य नहीं किया जा सकता है, इसलिए वे लगातार सनातन धर्म की ओर आकर्षित हो रहे थे। महामंडलेश्वर के प्रयासों से उन्हें घर वापसी में आसानी हो गई।

स्व की ओर लौटता भारत.....

प्रधानमंत्री मोदी 28 मई को संसद भवन के नवनिर्मित भवन को राष्ट्र को समर्पित करेंगे। इस अवसर पर ऐतिहासिक राजदंड **सेंगोल** को वैदिक मंत्रोच्चार के साथ नए संसद भवन में स्थापित किया जाएगा। इसका पिछली बार उपयोग 14 अगस्त, 1947 को तब किया गया था, जब अंग्रेजों से सत्ता का हस्तांतरण भारतीयों को हुआ था।

इसे तमिल में सेंगोल कहते हैं, इस शब्द का अर्थ **धन और संपदा से भरा हुआ** होता है। इसके पीछे युगों से जुड़ी एक परंपरा है। सेंगोल ने हमारे इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह सेंगोल सत्ता के हस्तांतरण का प्रतीक था।

जब इसके महत्व की जानकारी मिली तो गहनता से जांच की गई। फिर तय हुआ कि इसे देश के सामने रखा जाए। इसके लिए नए संसद भवन के उद्घाटन का दिन चुना गया।

प्रवसी समुदाय मालवा प्रांत का तीन दिवसीय खेल महोत्सव व महासम्मेलन संपन्न

घुमंतू समाज का देश के प्रति समर्पण रहा -घुमंतू समाज ऐसा समाज हैं, जिनके पूर्वज धर्म रक्षक स्वतंत्रता संग्राम के योद्धा रहे हैं। लेकिन वर्तमान में समाज की मुय धारा से अलग हैं, इन्हें समर्थवान व स्वालेबी बनाना प्रत्येक सेभान्त देश भक्त का परम कर्तव्य हैं। घुमंतू समाज का बलिदान भी देश के लिए उल्लेखनीय हैं। घुमंतू समाज का देश के प्रति समर्पण रहा है।

यह बात प्रवासी समुदाय मालवा प्रांत जिला आगर द्वारा आयोजित तीन दिवसीय खेल महोत्सव एवं महासैलन 2023 के समापन अवसर पर आयोजित समारोह में मुय अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह प्रांत प्रचारक राजमोहन जी ने कही। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मां बगलामुखी पीठ के पीठाधीश्वर स्वामी कृष्णानन्द महाराज ने कहा कि घुमंतू समाज एक ऐसा समाज हैं, जिसने विभिन्न प्रकार की जरूरतों को पुरा करने के लिए अलग-अलग काम का चयन किया और इस कार्य को वे आज भी घुम-घुम कर पुर्ण कर रहे हैं। समाज में जब-जब आक्रांता आए तब-तब इस समाज ने उनका सामना किया। आक्रांताओं से लड़ाई में भी घुमक्कड़ समाज का महत्वपुर्ण योगदान रहा। घुमंतू समाज के लोग आर्थिक, धार्मिक व स्वतंत्रता के सेनानी है। घुमंतू समाज देश भक्त, स्वाभिमानी और प्रतिभा सेपन्न समाज भी हैं।

18 टीमों ने लिया भाग- खेल महोत्सव के अन्तर्गत क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। जिसमें 7 घुमक्कड़ जातियों की 18 टीमों ने भाग लिया। फायनल भादवा खेड़ा व दुधपुरा की टीम के बीच हुआ। जिसमें भादवा खेड़ा की टीम विजेता व दुधपुरा की टीम उपविजेता रही। अतिथियों के साथ मोहन ींची, देवेंद्र पेंडसे इंदौर, संदीप, राधेश्याम विश्वकर्मा, गिरिराज गुप्ता, देवेंद्र दुबे, महेश जिनवाल, जनपद उपाध्यक्ष प्रतिनिधि हरिनारायण यादव, अजा मोर्चा जिलाध्यक्ष मधु गेहलोत ने अतिथियों के साथ विजेता, उप विजेता टीम को पुरूस्कृत किया। कार्यक्रम का संचालन प्रवासी समुदाय की प्रांत टोली के सदस्य हर्ष तिवारी ने किया।

महर्षि नारद जयंती कार्यक्रम

हिन्दू साम्राज्य दिन 350 वां समारोह

ज्येष्ठ शु. त्रयोदशी - 2 जून 2023 से 20 जून 2024

जुलाई माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 04 स्वामी विवेकानंद पुण्यतिथि
ता. 06 डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी पुण्यतिथि
ता. 06 गणेश चतुर्थी व्रत
ता. 11 विश्व जनगणना दिवस
ता. 23 लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ज.
ता. 23 चन्द्रशेखर आजाद जयंती
ता. 26 डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पु.ति.

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा
प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341